International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN- 2250-2629, (Print), E- ISSN-2320-5466, ISSUE- 10, VOL-I, Oct,2013

शोध पत्र - अर्थशास्त्र

भैरवगढ़ की परम्परागत वस्त्र छपाई तथा वर्तमान वस्त्र छपाई का अध्ययन

* डॉ. मधुबाला वर्मा ** कु. अंकिता फौजदार

* प्राध्यापक गृहविज्ञान, शासकीय गीतांजली कन्या महाविद्यालय, भोपाल (म. प्र.)

** शोध छात्रा, गृहविज्ञान संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म. प्र.)

सारांश :– *भैरवगढ की परम्परागत वस्त्र छपाई तथा वर्तमान मे हो रही छपाई के अध्ययन हेतु 40 छीपाओं का चयन किया गया। इसके लिए साक्षात्कार व अवलोकन विधि का प्रयोग किया । शिल्पियों का साक्षात्कार करके तथ्य एकत्रित किए गए। तथ्यों का अध्ययन व विवेचा करके ज्ञात हुआ कि भैरवगढ मे वातिक छपाई व स्क्रीन प्रिटिंग सर्वाधिक की जा रही है। जिसका मुख्य कारण अन्य छपाई कला की तुलना मे यह छपाई कला सरल, सस्ती व उत्पादन क्षमता अधिक है। व बाजार मे सस्ती होने के कारण आसानी से बेचा जा सकता है। वातिक छपाई व स्क्रीन प्रिटिंग को किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पडता। परम्परागत वस्त्र छपाई का कम होने का कारण पुराने ठप्पों का, औजारों का आभाव, परम्परागत छपाई शैली का अपूर्ण ज्ञान। जिस कारण वश आधुनिक वस्त्र छपाई शैली को अपनाना सरल लगा। एक कारण यह भी है कि शिल्पियों की आर्थिक स्थिति मजबूत न होना है।*

प्रस्तावना :–

भैरवगढ उज्जैन का एक भाग होते हुए भी अलग है। उज्जैन से सात किलोमीटर दूर क्षिप्रा नदी के किनारे बसा हुआ एक गांव है। भैरवगढ को किसने बसाया और कब बसाया इसका कोई प्रमाण तो नहीं है, फिर भी काफी लोगों का मानना है कि यह दो हजार वर्ष पूर्व बसाया गया था। भैरवगढ़ की आबादी करीब 10–12 हजार है। इसमें से छीपा जाति के करीब तीन सौ परिवार बसते है। किंतु करीब 100 परिवार ही वस्त्र छपाई का कार्य करते है। छीपा जाति का इतिहास भाट के पास आज भी मौजूद है। यह भाट मूलतः राजस्थान के जयपुर शहर मे रहते है। वर्तमान मे छीपा जाति का इतिहास चार पोथी में विभाजित है।

पोथी नं. 1 :– इस पोथी मे समग्र भारत के मुसलिम, भाटी, छीपा की वशांवली है। इस पोथी की पृष्ठ संख्या 17,280 है। इस पोथी मे संवत 1211 से आज तक मुरलिम छीपा जाति , उनकी संख्या, स्थान, रहन–सहन, शादी ब्याह का ब्यौरा है।

पोथी नं. 2:– इस पोथी मे समग्र छीपा जाति की उपजाति 'टांक' की वंशावली है। टांक जाति की दो शाखाएं ऊंटवाला टांक और रोफा टांक का विवरण है।

पोथी नं. 3–4 में भाटी और टांक को छोडकर वाकी सभी छीपा जाति की वंशावली है। इस प्रकार पोथी के आधार पर छीपा जाति की कुल उपजातियां 13 है। पोथी के आधार पर पूर्व मे छीपा जाति हिंदू धर्म को मानती थीं । किंतु फिरोज शाह तुगलक के शासन काल मे इसके द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया गया। बाकी छीपा जाति वर्तमान में नीमा भावसार आदि नामों से जानी जाती है।

भैरवगढ़ की वस्त्र कला किसी समय अपने पूरे यौवान पर थी। न केवल देश में अपितु विदेशों मे भी इसकी मांग थी। समय के साथ–साथ यह कला दम तोडने लगी। मशीनों का अविष्कार हुआ, छपाई मे विभिन्न आधुनिक विधियों का अविष्कार हुआ । इस कारण वस्त्र छपाई पर इसका प्रभाव पडना आवश्यक था। भैरवगढ़ के शिल्पी भी इस प्रभाव से बच न सके।

मुख्यतः भैरवगढ़ में चार प्रकार की वस्त्र छपाई की जाती है।

1. बंधेज / कलमकारी / रोगनप्रिंट
2. वातिक छपाई
3. ब्लॉक प्रिंटिग
4. स्क्रीन छपाई

ब्लॉक छपाई

भैरवगढ़ में विभिन्न आकार–प्रकार के करीब 1500 ठप्पे *(ब्लॉक)* प्रचलन मे है। परम्परागत ठप्पे यदा–कदा ही प्रयेाग में लाये जाते है। इनकी संख्या भी अधिक नहीं है। परंपरागत ठप्पों की अपनी एक अलग ही पहचान है। उन ठप्पों का नाम भी है। आलेख के आधार पर दिये गये है। जो आलेख को उजागर करते है। इसी प्रकार इन ठप्पों की छपाई भी

निर्धारित वस्त्रों पर ही की जाती थी। अर्थात् जो ब्लॉक लुगडें का है, वह लुगडों पर ही छपेगा।

भैरवगढ़ में सन् 1980 से स्क्रीन प्रिटिंग का कार्य विधिवत् रूप से प्रारंभ हुआ । इसमें सर्वप्रथम तकिए के खोल से शुरूआत की गई। और आज भैरवगढ़ में स्क्रीन प्रिंटिंग के अनेक यूनिट स्थापित हो चुके है। भैरवगढ़ में करीब 20 यूनिट कार्यरत है। इनमें प्रमुख रूप से पांच छः यूनिट बडें पैमाने पर कार्य कर रहे है। छपाई के साथ–साथ स्क्रीन तैयार करने का कार्य भैरवगढ में ही किया जाता है। इनमें से प्रमुख स्क्रीन बनाने वाले श्री मेहबूब, श्री मुश्ताक, हुसैन भाई, फरीद भाई है। और आज वर्तमान में भैरवगढ़ में स्क्रीन प्रिंटिग ने अपना एक स्थान बना लिया है। बांधनी व कलमकारी का कार्य भी भैरवगढ़ में होता है। यह कार्य एक–दो ही छीपा द्वारा किया जाता है। वह भी अपने शौक बस इस कार्य को करते हे। परंपरागत बाधंनी चौकोर एवं बारीक होती है। बांधनी को एक या एक से अधिक रंगों से रंगा जाता है।

कलमकारी

वस्त्रों को सजाने की एक पुरानी विधि को कलमकारी कहा जाता है। प्राचीनकाल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कलमकारी का प्रयोग धार्मिक कार्यो में होता था। भैरवगढ़ में यह कार्य रहीम गुटटी जी द्वारा किया जाता है।

Kashyap, p. and Raut, s. (2006) के अनुसार शिल्पियों में क्षेत्रीय मांग को न पहचान पाने की कमी, बाजार के उतार–चढाव तथा मोल–भाव न कर पाने की क्षमता एवं बिक्री कला का अभाव होने के कारण यह बाजारीय रणनीति की योजना नहीं बना पाते ।

SARVA MANSHA P. (2009) के अनुसार उज्जैन के पास स्थित भैरवगढ मे छीपा रहते है जो लुगडा, रजाई की खोल, ओढनी, जाजम बनाने में माहिर है। स्वतंत्रता के पूर्व एक सुंदर छपी हुई रजाई अकबर के दरबार मे पेश की गई थी। तथा ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा क्विलट यूरोप निर्यात् की गई थी।

साक्षात्कार

मो. महमूद असगर के अनुसार :– भैरवगढ में अब ब्लॉक प्रिंटिग तथा बंधेज लगभग समाप्त हो चुकी है। स्क्रीन प्रिंटिग ही लोगों की रोजी रोटी का साधन है। हम अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए अंतिम लडाई लड रहे है।

उद्देश्य :–

भैरवगढ की परम्परागत वस्त्र छपाई तथा वर्तमान वस्त्र छपाई का अध्ययन।

न्यादर्श:–

न्यादर्श के रूप में भैरवगढ की विभिन्न रंगाई, छपाई कार्य में कार्यरत् 40 छीपाओं (शिल्पियों) का दैव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण व विधि:–

40 छीपाओं का दैव–निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। । चयनित छीपाओं का साक्षात्कार करके तथ्य एकत्रित तथा अवलोकन द्वारा तथ्य एकत्रित किए गए । तथ्यों से प्राप्त आंकडों का फलांकन किया गया एवं मास्टर शीट तैयार की गई एवं प्राप्त आंकडों का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा का परिणाम प्राप्त किये गये।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण इस प्रकार है।

अध्ययन क्षेत्र में चयनित न्यादर्श छपाई कारीगरों द्वारा वर्तमान

क्रं.	भैरवगढ मे की जा रही ***वस्त्र छपाई***	संख्या	प्रतिशत
1.	बंधेज	1	2.5 प्रतिशत
2.	ब्लॉक प्रिटिंग	2	5,0 प्रतिशत
3	वातिक प्रिटिंग	26	65 प्रतिशत
4.	स्क्रीन प्रिटिंग	11	27.5 प्रतिशत

में की जा रही वस्त्र छपाई का अध्ययन

उपरोक्त तालिका में अध्ययन क्षेत्र में चयनित न्यादर्श छपाई कारीगरों द्वारा की जा रही वस्त्र छपाई कला में अंतर तुलनात्मक परिणामों के प्रतिशत में प्रदर्शित किया गया है। परिणामों में स्पष्ट है कि अधिकतर वस्त्र छपाई कारीगर (65. 00) प्रतिशत वातिक प्रिंटिक से जुडे हुए है। जबकि 27.5 प्रतिशत छपाई कारीगरों द्वारा स्क्रीन प्रिंटिग की जा रही है। 5 प्रतिशत छपाई कारीगर ब्लॉक छपाई में शामिल है व 2. 5 प्रतिशत छपाई कारीगरों द्वारा बंधेज का कार्य किया जा रहा है। अतः निष्कर्ष द्वारा कहा जा सकता है कि चयनित न्यादर्श छपाई कारीगरों में वातिक छपाई एवं स्क्रीन प्रिंटिग अन्य प्रिंटिग की अपेक्षा अधिक है।

निष्कर्ष:–

प्राप्त आंकडों द्वारा पता चलता है कि छपाई रंगाई कारीगरों द्वारा वातिक व स्क्रीन वस्त्र छपाई का कार्य भैरवगढ में सर्वाधिक किया जा रहा है। ब्लॉक प्रिंटिग का स्थान स्क्रीन

प्रिंटिंग लेती जा रही है। जिसका मुख्य कारण छपाई मे शार्पनेस अधिक है और बारीक से बारीक लाइन (डिजाईन) साफ नजर आती है। वर्तमान समय मे स्क्रीन प्रिटिंग द्वारा कैलेण्डर, विज्ञापन के बेनर इत्यादि छापे जा रहे है जो कि रोजगार का अच्छा साधन है व स्क्रीन प्रिटिंग में उत्पादन अधिक, लागत कम है। जिससे मुनाफा अधिक होता है। भैरवगढ की परम्परागत वस्त्र छपाई का कम होने का कारण तैयार वस्त्र छपाई के लिए विज्ञापनों की कमी है। साप्ताहिक हॉट की सुविधा का आभाव है आज भी कुछ छीपा परंपरागत छपाई कला को जीवित रखना चाहते है लेकिन इनके सामने भी कठिनाई है कि पुराने ब्लॉकों की रूप रेखा का अभाव। क्योकि शिल्पियों द्वारा पुराने ब्लॉकों बेच दिए गऐ है। और नष्ट कर दिए । वर्तमान मे भैरवगढत्र मे ठप्पे बनाने का कार्य कार्य कोई नहीं करता यह कार्य मुख्यतः उत्तरप्रदेश में फरूखाबाद एवं गुजरात मे पीतापुर मे होता है जिस कारण से ठप्पे का मूल्य बहुत बढ जाता है जिस कारण ब्लॉक प्रिंटिग का कार्य कम हो गया है हस्त छपाई के प्रति लोगों को ज्ञान भी कम है वह मशीनीकृत छपाई व हस्त छपाई मे अंतर नहीं कर पाते। दूसरी ओर शिल्पियों की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है जिस कारण व मशीनीकृत छपाई को अपना रहे है। अगर परंपरागत छपाई को जीवित रखना है तो शिल्पियों की आर्थिक स्थिति मे सुधार लाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1- Kashyap P. and Rauts (2006) the Rural Marketing Book
2- Servamansha. P. 2009- weqver and craft ofIndia 21 may
3- गुटटी रहीम ''भैरवगढ़ की वस्त्र छपाई कला परम्परा से आधुनिकता तक